3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली
भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

बाल शहीदों की गौरव गाथा

अनन्तसिंह

● रविचन्द्र गुप्ता

अनन्तसिंह का जन्म सन् १९१० में चटगांव (बंगलादेश) में हुआ था। उसने एवं मास्टर दा सूर्यसेन ने चटगाँव को अंग्रेजी शासन के पंजों से मुक्त कराने की योजना बनाई। इसके लिए अनन्तसिंह ने हथियारों का प्रबंध किया। १८ अप्रैल, १९३० को पुलिस शस्त्रागार को लूटने में अनन्तसिंह की मुख्य भूमिका थी। शस्त्रागार लूटने के बाद शेष सामान को आग लगा दी गई। आग में उनका साथी हिमांशु दत्त झुलस गया। अनन्तसिंह ने ही बस्ती में एक सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया। चटगाँव अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त हो गया। उस पर 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी' का ध्वज फहरा दिया गया। लेकिन २२ अप्रैल को भारी संख्या में अंग्रेज सेना ने जलालाबाद की पहाड़ी पर मोर्चा जमा लिया। केवल १० क्रांतिवीर शहीद हुए लेकिन दुश्मन के १६० सैनिक मारे गए। शेष क्रांतिवीर रात्रि के अंधकार का लाभ उठा कर बच निकले।

बाद में चटगाँव शस्त्रागार काण्ड के अनेक क्रांतिवीर पकड़े गए। उनमें से कुछ ने सरकारी गवाह बनना स्वीकार कर लिया। अनन्तसिंह का विश्वास था कि यदि वह अपने को गिरफ्तार करा दे तो वह उन बंदी साथियों को क्रांतिवीरों के विरुद्ध गवाही देने से रोक सकता है। अत: उसने घोषणा करा दी – ''२८ जून, १९३० को अनन्तसिंह आत्म समर्पण करेगा।'' इस घोषणा ने कोलकाता में हलचल मचा दी। सभी को आश्चर्य था कि अनन्तसिंह जैसा दिलेर क्रांतिकारी आत्मसमर्पण क्यों करेगा? अनन्तसिंह ने घोषणा के अनुसार आत्मसमर्पण कर दिया। जेल में जाकर अपने साथियों पर उसने ऐसा मन्त्र फेरा कि वह सभी सरकारी गवाही से मुकर गए। पुलिस अनन्तसिंह की चालाकी समझ गई। इसी कारण उसे भयंकर यातनाएँ सहनी पड़ीं। लेकिन विप्लवी ऐसी यातनाओं से कभी डरा है क्या?

यातनाओं के कारण केवल बीस वर्ष की आयु में ही अनन्तसिंह ने जेल में प्राण त्याग दिए। ● **दिल्ली**